पहला पहला प्यार और मिलन की बेचैनी -2

“ऐसी संतुष्टि पहले कभी नहीं हुई.. जैसी आज हम पसीने में लथपथ एक-दूसरे से लिपटे हुए थे.. दुनिया की सारी खुशियों और गम से बेखबर.. सच कहते हैं.. पहला प्यार भुलाये से भी नहीं भुलाया जा सकता।”

...

Story By: पवित्र सिंह (pavitrasingh)
Posted: Friday, March 18th, 2016
Categories: पहली बार चुदाई
Online version: पहला पहला प्यार और मिलन की बेचैनी -2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

पहला पहला प्यार और मिलन की बेचैनी -2

सोनिका जैसे ही मेरे कमरे में आई.. मैंने कुण्डी लगाई और हम एक-दूसरे से लिपट गए।
ऐसा लग रहा था बरसों का इंतज़ार खत्म हो गया हो।
फिर हम दोनों अलग हुए.. एक लम्बा समूच किया और केक काटने लगे।

ऐसा लग रहा था जैसे हमें सारे जहाँ की खुशियाँ मिल गई हों।
मैं बहुत खुश था… ऐसा जन्मदिन सबके नसीब में थोड़े ही होता है और न ही हर किसी को ऐसा हम-सफ़र मिलता है।
मेरी तो नजर आज उसकी खूबसूरती से हट ही नहीं रही थी।

हमने केक के एक टुकड़े को अपने होंठों में दोनों तरफ से लिया और खाने लगे.. उसके ख़त्म होते ही हम एक-दूसरे के होंठों पर लगे हुए केक को अपने होंठों से साफ़ करने लगे। फिर हमने उसे एक तरफ रखा और दूसरी पारी की तैयारी करने लगे।

मैंने दोनों सिंगल बेड को मिलकर एक बड़ा बिस्तर बना दिया था। सोनिका ने थोड़ी देर के लिए मुझे बाहर भेजा। जब मैं अन्दर गया तो मेरी तो बांछें खिल गईं क्योंकि बिस्तर पर सोनिका नहीं.. मेरे सपनों की राजकुमारी बैठी थी.. उसी साड़ी में जो मैंने उसे लाकर दी थी.. पल्लू ढके हुए.. बिल्कुल एक दुल्हन की तरह.. आह्ह.
जो सरप्राइज गिफ्ट उसने मुझे दिया था.. उसके आगे तो दुनिया की सारी खुशियाँ.. सारे उपहार कम थे।

मैं उसके पास जाकर बैठ गया और उसका घूंघट उठाने लगा.. पर वो सिमट गई।
मैं समझ गया उसे क्या चाहिए था, मैंने अपनी जेब से वो डायमंड रिंग निकाल कर उसकी उंगली में पहना दी जो उसका मुँह दिखाई का तोहफा था.. इस डायमंड रिंग की चमक

उसकी बला की खूबसूरती के आगे फीकी थी।
मैंने उसका घूंघट उठाया और उसके चाँद से चहरे को निहारता ही रह गया.. ऐसी सुंदरता मैंने आज तक नहीं देखी थी.. मन करता था कि उसे देखता ही रहूँ.. सारी जिंदगी उसे अपनी नजरों से दूर न होने दूँ।

फिर भी जैसे-तैसे मैंने होश सम्भाला और उसके सुर्ख होंठों पर अपने होंठ रख दिए और उनका रसपान करने लगा।
वो धीरे-धीरे सिमटने लगी और लेट गई, मैं उसके साइड में लेट गया और उसकी साड़ी को उसके बदन से अलग कर दिया और एक दूसरे में खो गए। मैंने उसके चूचुकों को ब्लाउज के ऊपर से ही महसूस किया.. मैं उन्हें धीरे-धीरे अपनी उंगलियों से सहला रहा था और दूसरे हाथ से उसकी जाँघों को सहला रहा था।

थोड़ी ही देर में वो अपनी टाँगों को मेरी टाँगों से रगड़ने लगी और ‘इस्स्स्स.. इस्स्स्स्स.. स्स्स्स्स.. सीईईईईईए..’ करने लगी।
वो भी अपने हाथ को मेरे अंडरवियर के ऊपर से रगड़ने लगी और मेरे लौड़े को जोकि उसके होंठों का स्पर्श मेरे होंठों पर होते ही तन कर खड़ा हो गया था.. उसे रगड़ने लगी।
मैंने उसके पेटीकोट का नाड़ा खींच दिया और वो उसके सुनहरे बदन से अलग कर दिया।

अब वो सिर्फ ब्रा और पैन्टी में थी.. जो मैचिंग पिंक कलर के थे। दोस्तो, उसकी वो खूबसूरती मैं आज आँखें बंद करके भी महसूस करता हूँ.. तो बदन को बस उसकी ही जरूरत महसूस होती है.. मैं उसके ब्रा के ऊपर से ही उसकी संतरे जैसी गोल और कड़क चूचियों को चूमने और भींचने लगा।

उसका हॉट स्पॉट उसकी चूचियाँ ही थीं.. जिनके मर्दन से वो पलक झपकते ही गर्म हो जाती थी।
वो तो बस जैसे पागल ही हो गई और मुँह से ‘आआअहा.. आअहहहा.. ऊउह्ह्ह… ऊह्हू..

स्स्सीईई… स्स्स्स्स्सीई..’ जैसी आवाजें निकालने लगी।

मैंने उसकी ब्रा को उसके भरे हुए सीने से अलग किया और उसके छोटे-छोटे चूचुकों को.. जोकि खड़े होकर तन गए थे.. उन्हें मुँह में बारी-बारी से लेकर चूसने लगा।
सोनिका मेरी बाँहों में टूट रही थी.. मचल रही थी और मुझे अपने अन्दर समाने की कोशिश कर रही थी।
यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

पसीने में तर-बतर हम एक-दूसरे में खोये हुए थे और प्यार के उस अथाह समुंदर में गोते लगा रहे थे.. जिसकी कोई सीमा ही नहीं थी।
इतनी देर में ही सोनिका ने मेरे जिस्म से उस आखिरी कपड़े को उतार कर अलग कर दिया।
अब वो मेरे फौलादी आठ इंच के लौड़े से खेल रही थी.. क्योंकि वो ही उसे उस जन्नत की सैर कराने वाला था।

मैंने एक हाथ से उसकी पैन्टी के ऊपर से हल्के-हल्के से उसकी झांटों वाली चूत को मसलना जारी रखा.. जोकि एक डबलरोटी की तरह से फूल गई थी और ऐसा लग रहा था.. जैसे वहाँ पर कोई ज्वालामुखी हो।
सोनिका तो बस पागल सी हो गई थी.. वो अपनी चूत को मेरे हाथ पर मसल रही थी और मेरे लिंग को अपने हाथ से रगड़ रही थी।

मेरा हाल भी बहुत बुरा था.. पर मैं तो उसे उस जन्नत की सैर करने वाला था.. जो इसी तरह से हासिल की जा सकती है।
मैंने उसकी पैन्टी को निकाल फेंका और एक उंगली उसकी कुंवारी चूत में उतार दी और उसके भग्नासा.. जिसे हम चौकीदार या सिपाही भी कहते हैं.. उसे सहलाने लगा।

वो अपने चूतड़ उठा-उठा कर अपनी कामनाएँ जाहिर कर रही थी। मैंने उसे 69 की

पोजीशन में किया और उसके योनिद्वार पर अपने होंठ लगाकर अपनी जिह्वा को उसकी चूत के अन्दर घुसेड़ कर चूत को सहलाने और अन्दर-बाहर करने लगा।
सोनिका भी मेरे लंड को अपने मुँह में अन्दर तक ले जाकर चूस रही थी।

जिन्होंने कभी नहीं चुसवाया हो.. वो क्या जाने लण्ड चुसवाने में कितना मजा आता है.. और औरत को उतना ही मजा चूत चुसवाने में आता है।

पांच मिनट तक चूसने के बाद ऐसा लगा जैसे सोनिका कि चूत में सैलाब आ गया हो.. उसने मेरे मुँह को अपनी जाँघों में भींच लिया और ढेर सारा रस छोड़ दिया।
वो मजा उसे भी पहली बार आया था और मुझे भी.. जो कि उसने मेरे लंड को चूस-चूसकर उसका वीर्य अपने मुँह में भर कर दिया।

अब तो बस इन्तेहा हो गई थी.. और इंतज़ार न तो उससे सहा जा रहा था और न ही मुझसे..
मैंने उसे बिस्तर पर सीधा लिटाया और अपना आठ इंची लंड.. जोकि अपनी महबूबा से मिलने के लिए बेकरार था.. उसे सोनिका की छोटी सी गुलाबी चूत पर नीचे से ऊपर की तरफ रगड़ने लगा ताकि वो उसको महसूस कर सके।

यह अहसास जीवन में बस एक बार ही होता है.. जो मैं उसे देने वाला था.. सो मैंने जल्दबाजी नहीं की और उसे इतना तड़पाया उस चीज के लिए.. जो बस उसी की थी।

सोनिका अपने मुँह से ‘ईईस्स्स्स्स्स्स.. स्स्स्सीईई..’ आदि आवाजें निकाल रही थी और मेरे लंड को आमंत्रण दे रही थी कि वो उसकी कोंपल सी कोमल योनि का मर्दन करके उसे कली से फूल बना दे।

मैंने उसकी चूत के नीचे एक तकिया लगाया और अपना लंड उसकी चूत के मुँह पर लगाकर

थोड़ा सा ही धकेला था कि वो दर्द से बिलबिला उठी.. क्योंकि उसकी कोमल सी चूत और मेरा धाकड़ लंड..

लोग कह देते हैं कि थोड़ा सा दर्द होगा.. जिसकी फटती है न.. उससे पूछो.. उसे कितना दर्द होता है.. अगर लण्ड घुसाओगे तो दर्द तो होगा ही.. और अगर लुल्ली घुसाओगे तो कहाँ से होगा।
मैंने दो बार और कोशिश की.. पर उसे बेइंतिहा तकलीफ हो रही थी.. और वो अपने पैर भींच रही थी।

मैंने सोचा ऐसे तो काम नहीं चलेगा.. मैंने उसके होंठों को अपने होंठों में लिया और उसे अपनी बाँहों में भींच लिया.. फिर उसकी टाँगों के बीच में आकर उसकी टाँगों को अपनी कमर के ऊपर से कर लिया.. ताकि थोड़ी चूत के होंठ खुलने से लण्ड को प्रवेश कराने में आसानी हो जाए।

अब उसकी तड़प मुझसे भी सही नहीं जा रही थी.. मैंने कामदेव का नाम लेकर अपने लण्ड का एक तगड़ा झटका लगा दिया और उसकी चूत का कौमार्य भेदन होने से उसकी चूत से खून की धार बहने लगी.. वो बेहोश हो गई थी.. मैं डर गया.. कि कहीं कोई परेशानी न हो जाए।

मैंने अपना लंड उसकी चूत से बाहर निकाला और उसके मुँह पर पानी के छींटे दिए.. उसे होश आ गया था।

उसकी आवाज़ में मैं दर्द महसूस कर रहा था.. पर अब इस मदहोशी के लम्हे में हमने रुकना ठीक नहीं समझा और दूसरे दौर में मैंने उसकी चूत पर वैसलीन लगाई और अपना लौड़ा उसकी चूत पर लगाकर थोड़ा सा धकेला.. क्योंकि उसकी झिल्ली तो फट चुकी थी.. सो उसे थोड़ा समझाया और उसके होंठों को अपने होंठों में लेकर झटका मारा.. लंड थोड़ा अन्दर

घुस गया..
वैसलीन की वजह से दर्द थोड़ा कम हो रहा था.. फिर भी मेरी जान तड़प रही थी।
पांच-सात झटकों में मैंने अपना लौड़ा सोनिका की अनछुई चूत में घुसा दिया और थोड़ी देर रुक कर अपने लौड़े को आगे-पीछे करने लगा।

अब सोनिका का दर्द भी थोड़ा कम हो गया था.. इसलिए वो भी नीचे से कमर उचका रही थी.. पहले एक बार वीर्य निकल जाने की वजह से पूरा टाइम लग रहा था दूसरे राउंड में.. सो अब तो सरपट भागती रेलगाड़ी की तरह हम ऊपर और नीचे से एक-दूसरे में समाने लगे।

'आआअह.. आआअह्ह्ह ह्ह्ह्ह..'
ये आवाजें सारे कमरे में गूँज रही थीं.. पर हमें सारे ज़माने की खबर कहाँ थी.. क्योंकि उस वक़्त तो सारा जहाँ हमारे कदमों में था।

मैंने फिर सोनिका को घुटनों के बल कर दिया और उसके पीछे से अपना लौड़ा उसकी चूत में घुसा दिया.. वो मस्ती में बोल रही थी- चोदोओओओओ.. मुझे.. मेरी जान पव्वी.. और जोर से.. आअह्ह ह्ह्ह्ह मजा आ रहा है.. और चोदो.. स्स्स्स्स्सीई आआआह्ह ह्ह्ह्ह..

हम पसीने से भीगे हुए एक-दूसरे को पाने में लगे हुए थे.. सारी दुनिया से बेखबर..

फिर ऐसा लगा जैसे सोनिका ज्यादा स्पीड से झटके देने लगी हो.. मैं भी उसका साथ निभाने लगा और उसको मैंने अपने ऊपर लिटाकर उसकी चूत में नीचे से अपना लौड़ा घुसाया और मैं जोर-जोर से झटके देने लगा.. साथ-साथ मैं उसकी चूचियों के निप्पल भी चूस रहा था और हाथों से उसके चूतड़ों को पकड़ कर झटके लगा रहा था।

फिर तो जैसे क़यामत ही आ गई हो.. सोनिका ने ढेर सारा योनिरस मेरे लंड पर छोड़ दिया

और निढाल हो गई।

मैंने भी जबरदस्त दस-पंद्रह झटके लगाए और अपना लावा उसकी चूत में छोड़ दिया और हम एक-दूसरे में समा गए। उसकी योनि मेरे लौड़े का संकुचन कर रही थी.. मानो वो रस पी रही हो।

ऐसी संतुष्टि पहले कभी नहीं हुई.. जैसी आज हम पसीने में लथपथ एक-दूसरे से लिपटे हुए थे.. दुनिया की सारी खुशियों और गम से बेखबर..
सच कहते हैं.. पहला प्यार भुलाये से भी नहीं भुलाया जा सकता।

आपको मेरा पहला पहला प्यार.. मेरे जीवन के हसीं लम्हे.. कैसे लगे.. प्लीज जरूर शेयर कीजिये।

pavitrachaudhary0001@gmail.com
pavitra.Chaudhary.923@facebook.com

Other stories you may be interested in

जिगोलो बन कर भाभी की जवानी की प्यास बुझाई

नमस्कार दोस्तो ! मेरा नाम मनोज है । मैं अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ और रोज़ अन्तर्वासना की कहानियाँ पढ़ कर अपना पानी निकालता था । और जब भी पानी निकल जाता था तो सोचता था कि ऐसा कैसे हो सकता है कि […]
Full Story >>>

भाभी की कुंवारी बहन की सीलतोड़ चुदाई

अन्तर्वासना के सभी दोस्तों को मेरा प्रणाम, मेरा नाम पंकज सिंह है. मैं पिछले 3 साल से दिल्ली में पढ़ाई कर रहा हूँ. मेरी उम्र अभी 24 साल है. मेरा कद 5 फुट 9 इंच है. मैं गोरे रंग का […]
Full Story >>>

चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-2

मेरी सेक्स कहानी के प्रथम भाग चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-1 में आपने पढ़ा कि कॉलेज में जाते ही मेरा दिल धड़कने लगा था किसी जवान मर्द के लिए, मेरी प्यासी जवानी मेरे सर चढ़ कर बोल रही थी. […]
Full Story >>>

बड़े चूचों वाली स्टूडेंट की चुदाई

हैलो ! नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम सन्दीप सिंह है. मैं भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले का रहने वाला हूं । मेरी हाइट करीब 5.7 फीट है । मैं सदैव व्यायाम करता हूं । जिससे मेरा शरीर बिल्कुल फिट है । […]
Full Story >>>

जीजा का ढीला लंड साली की गर्म चूत

नमस्कार मेरे प्यारे दोस्तो, मैं सपना राठौर आपके साथ फिर से अपनी नई कहानी शेयर करने के लिए वापस आई हूं. आपने मेरी पिछली कहानियों को खूब पसंद किया जिसमें मैंने जीजा के साथ सेक्स किया था. अब मैं अपनी […]
Full Story >>>